قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

اُتْلُ مآ اُوْحِیَ

पारा - 21

eParah

اُتْلُ	مَآ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ	مِنَ الْكِتٰبِ	وَ اَقِمِ	الصَّلٰوةَ ؕ	اِنَّ
तिलावत कीजिए	जो	वही किया गया	आपकी तरफ़	किताब में से	और क़ायम कीजिए	नमाज़	बेशक

الصَّلٰوةَ	تَنْهٰى	عَنِ الْفَحْشَآءِ	وَ الْمُنْكَرِ ؕ	وَ لَذِكْرُ	اللّٰهِ	اَكْبَرُ ؕ
नमाज़	रोकती है	बेहयाई से	और बुराई से	और अलबत्ता ज़िक्र	अल्लाह का	सबसे बड़ा है

وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	تَصْنَعُوْنَ ﴿45﴾	وَلَا	تُجَادِلُوْٓا	اَهْلَ الْكِتٰبِ	اِلَّا
और अल्लाह	वो जानता है	जो कुछ	तुम करते हो	और ना	तुम झगड़ा करो	अहले किताब से	मगर

بِالَّتِيْ	هِيَ	اَحْسَنُ ۖ ق	اِلَّا	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْهُمْ	وَ قُوْلُوْٓا
उस तरीक़े से जो	वो	सबसे अच्छा है	सिवाए	उनके जिन्होंने	ज़ुल्म किया	उनमें से	और कहो

اٰمَنَّا	بِالَّذِيْٓ	اُنْزِلَ	اِلَيْنَا	وَ اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ	وَ اِلٰهُنَا
ईमान लाए हम	उस पर जो	नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	तुम्हारी तरफ़	और इलाह हमारा

وَ اِلٰهُكُمْ	وَاحِدٌ	وَّ نَحْنُ	لَهٗ	مُسْلِمُوْنَ ﴿46﴾	وَ كَذٰلِكَ	اَنْزَلْنَآ
और इलाह तुम्हारा	एक ही है	और हम	उसी के	फ़रमांबरदार हैं	और इसी तरह	नाज़िल की हमने

اِلَيْكَ	الْكِتٰبَ ؕ	فَالَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ	الْكِتٰبَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ ۚ
तरफ़ आपके	किताब	पस वो लोग जो	दी हमने उन्हें	किताब	वो ईमान लाते हैं	उस पर

وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ	مَنْ	يُّؤْمِنُ	بِهٖ ؕ	وَمَا	يَجْحَدُ	بِاٰيٰتِنَآ	اِلَّا
और इनमें से भी हैं	जो	ईमान लाते हैं	उस पर	और नहीं	इंकार करते	हमारी आयात का	मगर

الْكٰفِرُوْنَ ﴿47﴾	وَمَا	كُنْتَ	تَتْلُوْا	مِنْ قَبْلِهٖ	مِنْ كِتٰبٍ	وَّلَا
जो काफ़िर हैं	और ना	थे आप	आप पढ़ते	इससे पहले	कोई किताब	और ना

تَخُطُّهٗ	بِيَمِيْنِكَ	اِذًا	لَّارْتَابَ	الْمُبْطِلُوْنَ ﴿48﴾	بَلْ	هُوَ	اٰيٰتٌ
आप लिखते थे इसे	अपने दाएं हाथ से	तब	अलबत्ता शक में पड़ जाते	बातिल परस्त	बल्कि	वो	आयात हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَجْحَدُ	وَمَا	الْعِلْمَ ط	اُوْتُوا	الَّذِيْنَ	فِيْ صُدُوْرِ	بَيِّنٰتٌ
इंकार करते	और नहीं	इल्म	दिए गए	उन लोगों के जो	सीनों में	वाज़ेह

اٰيٰتٌ	عَلَيْهِ	اُنْزِلَ	لَوْلَآ	وَقَالُوْا	الظّٰلِمُوْنَ (49)	اِلَّا	بِاٰيٰتِنَآ
निशानियां	उस पर	उतारी गईं	क्यों नहीं	और उन्होंने कहा	जो ज़ालिम हैं	मगर	हमारी आयात का

اَنَا	وَاِنَّمَآ	اللّٰهِ ط	عِنْدَ	الْاٰيٰتُ	اِنَّمَا	قُلْ	مِّنْ رَّبِّهٖ ط
मैं तो	और बेशक	अल्लाह के	पास हैं	निशानियां	बेशक	कह दीजिए	उसके रब की तरफ़ से

عَلَيْكَ	اَنْزَلْنَا	اَنَّآ	يَكْفِهِمْ	اَوَلَمْ	مُّبِيْنٌ (50)	نَذِيْرٌ
आप पर	नाज़िल की हमने	बेशक हम	काफ़ी उन्हें	क्या भला नहीं	खुल्लम-खुल्ला	डराने वाला हूं

لِقَوْمٍ	وَّذِكْرٰى	لَرَحْمَةً	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	عَلَيْهِمْ ط	يُتْلٰى	الْكِتٰبَ
उन लोगों के लिए	और नसीहत है	अलबत्ता रहमत	उसमें	बेशक	उन पर	जो पढ़ी जाती है	किताब

ع 5 7 1

يَعْلَمُ	شَهِيْدًا ج	وَبَيْنَكُمْ	بَيْنِيْ	بِاللّٰهِ	كَفٰى	قُلْ	يُّؤْمِنُوْنَ (51) ع
वो जानता है	गवाह	और दर्मियान तुम्हारे	दर्मियान मेरे	अल्लाह	काफ़ी है	कह दीजिए	जो ईमान लाते हैं

وَكَفَرُوْا	بِالْبَاطِلِ	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ	وَالْاَرْضِ ط	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا
और उन्होंने कुफ़्र किया	बातिल पर	ईमान लाए	और वो लोग जो	और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कुछ

بِالْعَذَابِ ط	وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ	الْخٰسِرُوْنَ (52)	هُمُ	اُولٰٓئِكَ	بِاللّٰهِ لا
अज़ाब	और वो जल्दी मांगते हैं आपसे	जो ख़सारा पाने वाले हैं	वो	यही लोग हैं	साथ अल्लाह के

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ	الْعَذَابُ ط	لَّجَآءَهُمُ	مُّسَمًّى	اَجَلٌ	وَلَوْلَآ
और अलबत्ता वो ज़रूर आएगा उनके पास	अज़ाब	अलबत्ता आ जाता उनके पास	मुक़र्रर	मुद्दत	और अगर ना होती

وَاِنَّ	بِالْعَذَابِ ط	يَسْتَعْجِلُوْنَكَ	لَا يَشْعُرُوْنَ (53)	وَّهُمْ	بَغْتَةً
और बेशक	अज़ाब	वो जल्दी मांगते हैं आपसे	वो शऊर ना रखते होंगे	इस हाल में कि	अचानक

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَهَنَّمَ	لَمُحِيْطَةٌۢ	بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿54﴾ لا	يَوْمَ	يَغْشٰهُمُ	الْعَذَابُ
जहन्नम	अलबत्ता घेरने वाली है	काफ़िरों को	जिस दिन	ढांप लेगा उन्हें	अज़ाब

مِنْ فَوْقِهِمْ	وَمِنْ تَحْتِ	اَرْجُلِهِمْ	وَيَقُوْلُ	ذُوْقُوْا	مَا	كُنْتُمْ
उनके ऊपर से	और नीचे से	उनके पांव के	और वो फ़रमाएगा	चखो	जो	थे तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿55﴾	يٰعِبَادِيَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنَّ	اَرْضِيْ	وَاسِعَةٌ
तुम अमल करते	ऐ मेरे बंदो	वो जो	ईमान लाए हो	बेशक	ज़मीन मेरी	वसीअ है

فَاِيَّايَ	فَاعْبُدُوْنِ ﴿56﴾	كُلُّ	نَفْسٍ	ذَآئِقَةُ	الْمَوْتِ قف	ثُمَّ
पस सिर्फ़ मेरी ही	पस तुम इबादत करो मेरी	हर	नफ़्स	चखने वाला है	मौत को	फिर

اِلَيْنَا	تُرْجَعُوْنَ ﴿57﴾	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
तरफ़ हमारे ही	तुम सब लौटाए जाओगे	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ	مِّنَ الْجَنَّةِ	غُرَفًا	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
अलबत्ता हम ज़रूर ठिकाना देंगे उन्हें	जन्नत के	बाला ख़ाने	बहती होंगी	उनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ط	نِعْمَ	اَجْرُ	الْعٰمِلِيْنَ ﴿58﴾ صلے	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	कितना अच्छा है	अजर	अमल करने वालों का	वो जिन्होंने	सब्र किया

وَعَلٰى رَبِّهِمْ	يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿59﴾	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ دَآبَّةٍ	لَّا تَحْمِلُ	رِزْقَهَا قلے
और अपने रब पर ही	वो तवक्कल करते हैं	और कितने ही	जानदार हैं	नहीं वो उठाते	रिज़्क़ अपना

اَللّٰهُ	يَرْزُقُهَا	وَاِيَّاكُمْ صلے	وَهُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿60﴾	وَلَئِنْ
अल्लाह	वो रिज़्क़ देता है उन्हें	और तुम्हें भी	और वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अलबत्ता अगर

سَاَلْتَهُمْ	مَّنْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَسَخَّرَ	الشَّمْسَ
पूछें आप उनसे	किसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	और उसने मुसख़्ख़र किया	सूरज

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَبْسُطُ	اَللّٰهُ	يُؤْفَكُوْنَ (61)	فَاَنّٰى	اللّٰهُ ۚ	لَيَقُوْلُنَّ	وَالْقَمَرَ
वो फैला देता है	अल्लाह	वो फेरे जाते हैं	तो कहां से	अल्लाह ने	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	और चांद को

اللّٰهَ	اِنَّ	لَهٗ ؕ	وَيَقْدِرُ	مِنْ عِبَادِهٖ	يَّشَآءُ	لِمَنْ	الرِّزْقَ
अल्लाह	बेशक	उसके लिए	और वो तंग कर देता है	अपने बंदों में से	वो चाहता है	जिसके लिए	रिज़्क़ को

نَزَّلَ	مَّنْ	سَاَلْتَهُمْ	وَلَئِنْ	عَلِيْمٌ (62)	شَیْءٍ	بِكُلِّ
नाज़िल किया	किसने	पूछें आप उनसे	और अलबत्ता अगर	ख़ूब जानने वाला है	चीज़ को	हर

مَوْتِهَا	مِنْ بَعْدِ	الْاَرْضَ	بِهِ	فَاَحْيَا	مَآءً	مِنَ السَّمَآءِ
उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को	साथ उसके	फिर उसने ज़िंदा किया	पानी	आसमान से

اَكْثَرُهُمْ	بَلْ	لِلّٰهِ ؕ	الْحَمْدُ	قُلِ	اللّٰهُ ؕ	لَيَقُوْلُنَّ
अक्सर उनके	बल्कि	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़	कह दीजिए	अल्लाह ने	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे

وَّلَعِبٌ ؕ	لَهْوٌ	اِلَّا	الدُّنْيَآ	الْحَيٰوةُ	هٰذِهِ	وَمَا	لَا يَعْقِلُوْنَ (63) ع
और खेल	शुग़ल	मगर	दुनिया की	ज़िंदगी	ये	और नहीं	नहीं वो अक़्ल रखते

ع 6 12 2

يَعْلَمُوْنَ (64)	كَانُوْا	لَوْ	الْحَيَوَانُ ۘ	لَهِیَ	الْاٰخِرَةَ	الدَّارَ	وَاِنَّ
वो इल्म रखते	होते वो	काश	ज़िंदगी है	अलबत्ता वो ही	आख़िरत का	घर	और बेशक

وقف لازم

لَهُ	مُخْلِصِيْنَ	اللّٰهَ	دَعَوُا	فِی الْفُلْكِ	رَكِبُوْا	فَاِذَا
उसके लिए	ख़ालिस करने वाले होकर	अल्लाह को	वो पुकारते हैं	कश्ती में	वो सवार होते हैं	फिर जब

يُشْرِكُوْنَ (65) ۙ	هُمْ	اِذَا	اِلَی الْبَرِّ	نَجّٰىهُمْ	فَلَمَّا	الدِّيْنَ ۚ ۵
वो शिर्क करने लगते हैं	वो	यकायक	तरफ़ ख़ुश्की के	वो निजात देता है उन्हें	तो जब	दीन को

يَعْلَمُوْنَ (66)	فَسَوْفَ	وَلِيَتَمَتَّعُوْا وقفة	اٰتَيْنٰهُمْ ۚ	بِمَآ	لِيَكْفُرُوْا
वो जान लेंगे	पस अनक़रीब	और ताकि वो फ़ायदा उठा लें	दिया हमने उन्हें	उसकी जो	ताकि वो नाशुक्री करें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّيُتَخَطَّفُ	اٰمِنًا	حَرَمًا	جَعَلْنَا	اَنَّا	يَرَوْا	اَوَلَمْ
और उचक लिए जाते हैं	अमन वाला	हरम को	बनाया हमने	बेशक हम	उन्होंने देखा	क्या भला नहीं

اللّٰهِ	وَبِنِعْمَةِ	يُؤْمِنُوْنَ	اَفَبِالْبَاطِلِ	مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ	النَّاسُ
अल्लाह की	और नेअमत का	वो ईमान लाते हैं	क्या फिर बातिल पर	उनके इर्द-गिर्द से	लोग

اَوْ	كَذِبًا	عَلَى اللّٰهِ	افْتَرٰى	مِمَّنِ	اَظْلَمُ	وَمَنْ	يَكْفُرُوْنَ ﴿67﴾
या	झूठ	अल्लाह पर	गढ़ ले	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	और कौन	वो इंकार करते हैं

مَثْوًى	فِيْ جَهَنَّمَ	اَلَيْسَ	جَآءَهٗ ؕ	لَمَّا	بِالْحَقِّ	كَذَّبَ
ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं है	वो आ जाए उसके पास	जबकि	हक़ को	वो झुठलाए

لَنَهْدِيَنَّهُمْ	فِيْنَا	جَاهَدُوْا	وَالَّذِيْنَ	لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿68﴾
अलबत्ता हम ज़रूर हिदायत देंगे उन्हें	हमारी (राह) में	जद्दो जहद की	और वो जिन्होंने	काफ़िरों के लिए

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿69﴾ ع	لَمَعَ	اللّٰهَ	وَاِنَّ	سُبُلَنَا ؕ
एहसान करने वालों के	अलबत्ता साथ है	अल्लाह	और बेशक	अपने रास्तों की

ع 7 6 3

رُكُوْعَاتُهَا: 6 — 84 سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ 30 — اٰيَاتُهَا: 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مِّنْۢ بَعْدِ	وَهُمْ	فِيْۤ اَدْنَى الْاَرْضِ	الرُّوْمُ ﴿2﴾ لا	غُلِبَتِ	الٓمّٓ ﴿1﴾ ج
बाद	और वो	क़रीब की ज़मीन में	रूमी	मग़लूब हो गए	الٓمّٓ

الْاَمْرُ	لِلّٰهِ	فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ	سَيَغْلِبُوْنَ ﴿3﴾ لا	غَلَبِهِمْ
हुक्म	अल्लाह ही के लिए है	चंद सालों में	अनक़रीब वो ग़ालिब आ जाएंगे	अपने मग़लूब होने के

بِنَصْرِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿4﴾ لا	يَفْرَحُ	وَيَوْمَئِذٍ	وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ	مِنْ قَبْلُ
मदद से	मोमिन	ख़ुश हो जाएंगे	और उस दिन	और इसके बाद	इससे पहले

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَعْدَ	الرَّحِيْمُ ⑤ لا	الْعَزِيْزُ	وَهُوَ	يَّشَآءُ ط	مَنْ	يَّنْصُرُ	اللهِ ط
वादा है	बहुत रहम करने वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	और वो	वो चाहता है	जिसकी	वो मदद करता है	अल्लाह की

لَا يَعْلَمُوْنَ ⑥	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ	وَعْدَهٗ	اللهُ	لَا يُخْلِفُ	اللهِ ط
नहीं वो जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	वादा अपना	अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता	अल्लाह का

هُمْ	عَنِ الْاٰخِرَةِ	وَهُمْ	مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا صلے ج	ظَاهِرًا	يَعْلَمُوْنَ
वो	आख़िरत से	और वो	दुनिया की ज़िंदगी के	ज़ाहिर को	वो जानते हैं

اللهُ	خَلَقَ	مَا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قف	يَتَفَكَّرُوْا	اَوَلَمْ	غٰفِلُوْنَ ⑦
अल्लाह ने	पैदा किया	नहीं	अपने नफ़्सों में	उन्होंने ग़ौरो फ़िक्र किया	क्या भला नहीं	ग़ाफ़िल हैं

وَاَجَلٍ	بِالْحَقِّ	اِلَّا	بَيْنَهُمَآ	وَمَا	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ
और वक़्त	साथ हक़ के	मगर	दर्मियान है उन दोनों के	और जो कुछ	और ज़मीन को	आसमानों

لَكٰفِرُوْنَ ⑧	رَبِّهِمْ	بِلِقَآئِ	مِّنَ النَّاسِ	كَثِيْرًا	وَاِنَّ	مُّسَمًّى ط
अलबत्ता इंकार करने वाले हैं	अपने रब की	मुलाक़ात का	लोगों में से	बहुत से	और बेशक	मुक़र्रर के

عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيْفَ	فَيَنْظُرُوْا	فِي الْاَرْضِ	يَسِيْرُوْا	اَوَلَمْ
अंजाम	हुआ	कैसा	तो वो देखते	ज़मीन में	वो चले फिरे	क्या भला नहीं

وَّاَثَارُوا	قُوَّةً	مِنْهُمْ	اَشَدَّ	كَانُوْٓا	مِنْ قَبْلِهِمْ ط	الَّذِيْنَ
और उन्होंने उधेड़ा था	क़ुव्वत में	उनसे	ज़्यादा शदीद	थे वो	उनसे पहले थे	उनका जो

وَجَآءَتْهُمْ	عَمَرُوْهَا	مِمَّا	اَكْثَرَ	وَعَمَرُوْهَآ	الْاَرْضَ
और आए उनके पास	इन्होंने आबाद किया है उसे	उससे जो	ज़्यादा	और उन्होंने आबाद किया था उसे	ज़मीन को

كَانُوْٓا	وَلٰكِنْ	لِيَظْلِمَهُمْ	اللهُ	كَانَ	فَمَا	بِالْبَيِّنٰتِ ط	رُسُلُهُمْ
थे वो	और लेकिन	कि वो ज़ुल्म करता उन पर	अल्लाह	था	तो ना	साथ वाज़ेह दलाइल के	रसूल उनके

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَسَآءُوا	الَّذِيْنَ	عَاقِبَةُ	كَانَ	ثُمَّ	يَظْلِمُوْنَ ⑨ط	اَنْفُسَهُمْ
बुराई की	उनका जिन्होंने	अंजाम	हुआ	फिर	वो ज़ुल्म करते	अपनी जानों पर

يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑩ع	بِهَا	وَكَانُوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	كَذَّبُوْا	اَنْ	السُّوْٓاٰى	ع 1 10 4
वो मज़ाक़ उड़ाते	उनका	और थे वो	अल्लाह की आयात को	उन्होंने झुठलाया	कि	बहुत बुरा	

تُرْجَعُوْنَ ⑪	اِلَيْهِ	ثُمَّ	يُعِيْدُهٗ	ثُمَّ	الْخَلْقَ	يَبْدَؤُا	اَللّٰهُ
तुम लौटाए जाओगे	तरफ़ उसी के	फिर	वो एआदा करेगा उसका	फिर	तख़्लीक़ की	वो इब्तिदा करता है	अल्लाह

يَكُنْ	وَلَمْ	الْمُجْرِمُوْنَ ⑫	يُبْلِسُ	السَّاعَةُ	تَقُوْمُ	وَيَوْمَ
होंगे	और ना	मुजरिम	नाउम्मीद हो जाऐंगे	क़यामत	क़ायम होगी	और जिस दिन

كٰفِرِيْنَ ⑬	بِشُرَكَآئِهِمْ	وَكَانُوْا	شُفَعٰٓؤُا	مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ	لَّهُمْ
इंकार करने वाले	अपने शरीकों का	और वो हो जाऐंगे	कोई सिफ़ारिशी	उनके शरीकों में से	उनके लिए

الَّذِيْنَ	فَاَمَّا	يَّتَفَرَّقُوْنَ ⑭	يَوْمَئِذٍ	السَّاعَةُ	تَقُوْمُ	وَيَوْمَ
वो लोग जो	तो रहे	वो मुताफ़र्रिक़ हो जाऐंगे	उस दिन	क़यामत	क़ायम होगी	और जिस दिन

وَاَمَّا	يُّحْبَرُوْنَ ⑮	فِيْ رَوْضَةٍ	فَهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا
और रहे	वो ख़ुश कर दिए जाऐंगे	एक बाग़ में	तो वो	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए

فَاُولٰٓئِكَ	الْاٰخِرَةِ	وَلِقَآئِ	بِاٰيٰتِنَا	وَكَذَّبُوْا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ
तो यही लोग	आख़िरत की	और मुलाक़ात को	हमारी आयात को	और झुठलाया	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने

وَحِيْنَ	تُمْسُوْنَ	حِيْنَ	اللّٰهِ	فَسُبْحٰنَ	مُحْضَرُوْنَ ⑯	فِي الْعَذَابِ
और जब	तुम शाम करते हो	जब	अल्लाह की	पस तस्बीह है	हाज़िर रखे जाने वाले हैं	अज़ाब में

وَعَشِيًّا	وَالْاَرْضِ	فِي السَّمٰوٰتِ	الْحَمْدُ	وَلَهُ	تُصْبِحُوْنَ ⑰
और तीसरे पहर	और ज़मीन में	आसमानों में	सब तारीफ़	और उसी के लिए है	तुम सुबह करते हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّحِيْنَ	تُظْهِرُوْنَ (18)	يُخْرِجُ	الْحَيَّ	مِنَ الْمَيِّتِ	وَيُخْرِجُ	الْمَيِّتَ
और जिस वक़्त	तुम ज़ोहर करते हो	वो निकालता है	ज़िंदा को	मुर्दा से	और वो निकालता है	मुर्दा को

مِنَ الْحَيِّ	وَيُحْيِ	الْاَرْضَ	بَعْدَ	مَوْتِهَا ؕ	وَكَذٰلِكَ
ज़िंदा से	और वो ज़िंदा करता है	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के	और इसी तरह

ع 2 9 5

تُخْرَجُوْنَ (19) ع	وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ	اَنْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ تُرَابٍ	ثُمَّ
तुम निकाले जाओगे	और उसकी निशानियों में से है	कि	उसने पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से	फिर

اِذَآ	اَنْتُمْ	بَشَرٌ	تَنْتَشِرُوْنَ (20)	وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ	اَنْ	خَلَقَ
यकायक	तुम	इंसान हो	तुम फैलते चले जा रहे हो	और उसकी निशानियों में से है	कि	उसने पैदा किए

لَكُمْ	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ	اَزْوَاجًا	لِّتَسْكُنُوْۤا	اِلَيْهَا	وَجَعَلَ	بَيْنَكُمْ
तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों से	जोड़े	ताकि तुम सुकून पाओ	उनकी तरफ़	और उसने डाल दी	दर्मियान तुम्हारे

مَّوَدَّةً	وَّرَحْمَةً ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ (21)
मोहब्बत	और रहमत	बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ	خَلْقُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاخْتِلَافُ	اَلْسِنَتِكُمْ
और उसकी निशानियों में से है	पैदाइश	आसमानों	और ज़मीन की	और इख़्तिलाफ़	तुम्हारी ज़बानों का

وَاَلْوَانِكُمْ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّلْعٰلِمِيْنَ (22)	وَمِنْ اٰيٰتِهٖ
और तुम्हारे रंगों का	बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	इल्म वालों के लिए	और उसकी निशानियों में से है

مَنَامُكُمْ	بِالَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	وَابْتِغَآؤُكُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
सोना तुम्हारा	रात	और दिन को	और तलाश करना तुम्हारा	उसके फ़ज़्ल से	यक़ीनन	इसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّسْمَعُوْنَ (23)	وَمِنْ اٰيٰتِهٖ	يُرِيْكُمُ	الْبَرْقَ
अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो सुनते हैं	और उसकी निशानियों में से है	कि वो दिखाता है तुम्हें	बिजली

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِهٖ	فَيُحْيٖ	مَآءً	مِنَ السَّمَآءِ	وَّيُنَزِّلُ	وَّطَمَعًا	خَوْفًا
साथ उसके	फिर वो ज़िंदा करता है	पानी	आसमान से	और वो उतारता है	और उम्मीद से	ख़ौफ़

لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مَوْتِهَا ؕ	بَعْدَ	الْاَرْضَ
उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	यक़ीनन	उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को

بِاَمْرِهٖ ؕ	وَالْاَرْضُ	السَّمَآءُ	تَقُوْمَ	اَنْ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ	يَّعْقِلُوْنَ (24)
उसके हुक्म से	और ज़मीन से	आसमान	क़ायम हैं	कि	और उसकी निशानियों में से है	जो अक़्ल रखते हैं

اَنْتُمْ	اِذَآ	مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ	دَعْوَةً ۖۗ	دَعَاكُمْ	اِذَا	ثُمَّ
तुम	यकायक	ज़मीन में	एक ही बार पुकारना	वो पुकारेगा तुम्हें	जब	फिर

لَّهٗ	كُلٌّ	وَالْاَرْضِ ؕ	فِي السَّمٰوٰتِ	مَنْ	وَلَهٗ	تَخْرُجُوْنَ (25)
उसी के लिए	सब	और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कोई	और उसी के लिए है	तुम निकल आओगे

وَهُوَ	يُعِيْدُهٗ	ثُمَّ	الْخَلْقَ	يَبْدَؤُا	الَّذِيْ	وَهُوَ	قٰنِتُوْنَ (26)
और वो	वो एआदा करेगा उसका	फिर	तख़्लीक़ की	इब्तिदा करता है	जो	और वो ही है	फ़रमांबरदार हैं

وَالْاَرْضِ ۚ	فِي السَّمٰوٰتِ	الْاَعْلٰى	الْمَثَلُ	وَلَهُ	عَلَيْهِ ؕ	اَهْوَنُ
और ज़मीन में	आसमानों में	आला	मिसाल	और उसी के लिए है	उस पर	ज़्यादा आसान है

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ	مَّثَلًا	لَكُمْ	ضَرَبَ	الْحَكِيْمُ (27) ع	الْعَزِيْزُ	وَهُوَ	ع 3 8 6
तुम्हारे नफ़्सों में से	एक मिसाल	तुम्हारे लिए	उसने बयान की	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	और वो	

فِيْ مَا	مِّنْ شُرَكَآءَ	اَيْمَانُكُمْ	مَلَكَتْ	مِّنْ مَّا	لَّكُمْ	هَلْ
उसमें जो	कुछ शरीक	दाऐं हाथ तुम्हारे	मालिक हैं	उसमें से जो	तुम्हारे लिए	क्या हैं

اَنْفُسَكُمْ ؕ	كَخِيْفَتِكُمْ	تَخَافُوْنَهُمْ	سَوَآءٌ	فِيْهِ	فَاَنْتُمْ	رَزَقْنٰكُمْ
अपने नफ़्सों (जैसों) से	जैसे डरना तुम्हारा	तुम डरते हो उनसे	बराबर हो	उसमें	तो तुम	रिज़्क़ दिया हमने तुम्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ (28)	بَلِ	اتَّبَعَ
इसी तरह	हम खोलकर बयान करते हैं	आयात	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	बल्कि	पैरवी की

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْٓا	اَهْوَآءَهُمْ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ج	فَمَنْ	يَّهْدِيْ
उन लोगों ने जिन्होंने	ज़ुल्म किया	अपनी ख़्वाहिशात की	बग़ैर	इल्म के	तो कौन	हिदायत दे सकता है

مَنْ	اَضَلَّ	اللّٰهُ ط	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (29)	فَاَقِمْ	وَجْهَكَ
उसको जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई	पस क़ायम रखिए	अपने चेहरे को

لِلدِّيْنِ	حَنِيْفًا ط	فِطْرَتَ	اللّٰهِ	الَّتِيْ	فَطَرَ	النَّاسَ	عَلَيْهَا ط
दीन के लिए	यकसू हो कर	फ़ितरत	अल्लाह की	वो जो	उसने पैदा किया	लोगों को	उस पर

لَا تَبْدِيْلَ	لِخَلْقِ	اللّٰهِ ط	ذٰلِكَ	الدِّيْنُ	الْقَيِّمُ ۙ	وَلٰكِنَّ
नहीं (जाइज़) कोई तब्दीली	ख़ल्क़ के लिए	अल्लाह की	यही है	दीन	दुरुस्त	और लेकिन

اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ (30) ۙ	مُنِيْبِيْنَ	اِلَيْهِ	وَاتَّقُوْهُ	وَاَقِيْمُوا
अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	रुजूअ करने वाले (बनो)	तरफ़ उसके	और डरो उससे	और क़ायम करो

الصَّلٰوةَ	وَلَا	تَكُوْنُوْا	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (31) لا	مِنَ الَّذِيْنَ	فَرَّقُوْا
नमाज़	और ना	तुम हो जाओ	मुशरिकों में से	उन लोगों में से जिन्होंने	फ़िरका-फ़िरक़ा कर दिया

دِيْنَهُمْ	وَكَانُوْا	شِيَعًا ط	كُلُّ	حِزْبٍ	بِمَا	لَدَيْهِمْ	فَرِحُوْنَ (32)
अपने दीन को	और हो गए वो	गिरोह-गिरोह	हर	गिरोह (के लोग)	उस पर जो	उनके पास है	खुश हैं

وَاِذَا	مَسَّ	النَّاسَ	ضُرٌّ	دَعَوْا	رَبَّهُمْ	مُّنِيْبِيْنَ	اِلَيْهِ
और जब	पहुंचती है	लोगों को	कोई तकलीफ़	वो पुकारते हैं	अपने रब को	रुजूअ करने वाले बन कर	तरफ़ उसके

ثُمَّ	اِذَآ	اَذَاقَهُمْ	مِّنْهُ	رَحْمَةً	اِذَا	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمْ
फिर	जब	वो चखाता है उन्हें	अपनी तरफ़ से	रहमत	यकायक	एक गिरोह (के लोग)	उनमें से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَتَمَتَّعُوْا وقفة	اٰتَيْنٰهُمْ ط	بِمَآ	لِيَكْفُرُوْا	يُشْرِكُوْنَ ﴿33﴾ لا	بِرَبِّهِمْ
तो फ़ायदे उठा लो	अता किया हमने उन्हें	उसकी जो	ताकि वो नाशुक्री करें	वो शरीक ठहराते हैं	अपने रब के साथ

يَتَكَلَّمُ	فَهُوَ	سُلْطٰنًا	عَلَيْهِمْ	اَنْزَلْنَا	اَمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿34﴾	فَسَوْفَ
वो बताती है	तो वो	कोई दलील	उन पर	उतारी हमने	या	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब

رَحْمَةً	النَّاسَ	اَذَقْنَا	وَاِذَآ	يُشْرِكُوْنَ ﴿35﴾	بِهٖ	كَانُوْا	بِمَا
कोई रहमत	लोगों को	चखाते हैं हम	और जब	वो शरीक ठहराते	साथ जिसके	हैं वो	उनको वो जो

قَدَّمَتْ	بِمَا	سَيِّئَةٌۢ	تُصِبْهُمْ	وَاِنْ	بِهَا ط	فَرِحُوْا
आगे भेजा	बवजह उसके जो	कोई बुराई	पहुंचती है उन्हें	और अगर	उस पर	वो ख़ुश होते हैं

اللّٰهَ	اَنَّ	يَرَوْا	اَوَلَمْ	يَقْنَطُوْنَ ﴿36﴾	هُمْ	اِذَا	اَيْدِيْهِمْ
अल्लाह	बेशक	उन्होंने देखा	क्या भला नहीं	वो मायूस हो जाते हैं	वो	यकायक	उनके हाथों ने

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	وَيَقْدِرُ ط	يَّشَآءُ	لِمَنْ	الرِّزْقَ	يَبْسُطُ
इसमें	बेशक	और वो तंग करता है	वो चाहता है	जिसके लिए	रिज़्क़	वो फैलाता है

وَالْمِسْكِيْنَ	حَقَّهٗ	ذَا الْقُرْبٰى	فَاٰتِ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿37﴾	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ
और मिस्कीन	हक़ उसका	क़राबतदार को	पस आप दीजिए	जो ईमान लाते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं

اللّٰهِ ز	وَجْهَ	يُرِيْدُوْنَ	لِّلَّذِيْنَ	خَيْرٌ	ذٰلِكَ	وَابْنَ السَّبِيْلِ ط
अल्लाह का	चेहरा	चाहते हैं	उनके लिए जो	बेहतर है	ये	और मुसाफ़िर को

لِّيَرْبُوَا۠	مِّنْ رِّبًا	اٰتَيْتُمْ	وَمَآ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿38﴾	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ
ताकि वो बढ़ जाए	सूद में से	देते हो तुम	और जो कुछ	जो फ़लाह पाने वाले हैं	वो	और यही लोग हैं

اٰتَيْتُمْ	وَمَآ	عِنْدَ اللّٰهِ ج	يَرْبُوْا	فَلَا	النَّاسِ	فِيْٓ اَمْوَالِ
देते हो तुम	और जो कुछ	अल्लाह के यहां	वो बढ़ता	पस नहीं	लोगों के	मालों में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُضْعِفُوْنَ (39)	هُمُ	فَاُولٰٓئِكَ	اللّٰهِ	وَجْهَ	تُرِيْدُوْنَ	مِّنْ زَكٰوةٍ
जो दोगुना करने वाले हैं	वो	तो यही लोग हैं	अल्लाह का	चेहरा	तुम चाहते हो	ज़कात में से

ثُمَّ	يُمِيْتُكُمْ	ثُمَّ	رَزَقَكُمْ	ثُمَّ	خَلَقَكُمْ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ
फिर	वो मौत देगा तुम्हें	फिर	उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें	फिर	पैदा किया तुम्हें	वो है जिसने	अल्लाह

مِنْ ذٰلِكُمْ	يَّفْعَلُ	مَّنْ	مِنْ شُرَكَآئِكُمْ	هَلْ	يُحْيِيْكُمْ ط
इसमें से	करे	जो	तुम्हारे शरीकों में से कोई	क्या है	वो ज़िंदा करेगा तुम्हें

ع 4 13 7

الْفَسَادُ	ظَهَرَ	يُشْرِكُوْنَ (40) ع	عَمَّا	وَتَعٰلٰى	سُبْحٰنَهٗ	مِّنْ شَيْءٍ ط
फ़साद	ज़ाहिर हो गया	वो शरीक ठहराते हैं	उससे जो	और वो बुलंदतर है	पाक है वो	कोई चीज़

لِيُذِيْقَهُمْ	النَّاسِ	اَيْدِي	كَسَبَتْ	بِمَا	وَالْبَحْرِ	فِي الْبَرِّ
ताकि वो चखाए उन्हें	लोगों के	हाथों ने	कमाई की	बवजह उसके जो	और समुन्दर में	ख़ुश्की में

سِيْرُوْا	قُلْ	يَرْجِعُوْنَ (41)	لَعَلَّهُمْ	عَمِلُوْا	الَّذِيْ	بَعْضَ
चलो फिरो	कह दीजिए	वो लौट आएं	ताकि वो	उन्होंने अमल किए	वो जो	बाज़ उसका

مِنْ قَبْلُ ط	الَّذِيْنَ	عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيْفَ	فَانْظُرُوْا	فِي الْاَرْضِ
(इनसे) पहले थे	उनका जो	अंजाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ	وَجْهَكَ	فَاَقِمْ	مُّشْرِكِيْنَ (42)	اَكْثَرُهُمْ	كَانَ
दुरुस्त दीन के लिए	चेहरा अपना	तो क़ायम रखिए	मुशरिक	अक्सर उनके	थे

مِنَ اللّٰهِ	لَهٗ	لَا مَرَدَّ	يَوْمٌ	يَّاْتِيَ	اَنْ	مِّنْ قَبْلِ
अल्लाह की तरफ़ से	उसके लिए	नहीं कोई टलना	वो दिन	आ जाए	कि	इससे पहले

عَمِلَ	وَمَنْ	كُفْرُهٗ ج	فَعَلَيْهِ	كَفَرَ	مَنْ	يَّصَّدَّعُوْنَ (43)	يَوْمَئِذٍ
अमल किया	और जिसने	कुफ़्र उसका	तो उसी पर है	कुफ़्र किया	जिसने	वो जुदा-जुदा हो जाएंगे	उस दिन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صَالِحًا	فَلِاَنْفُسِهِمْ	يَمْهَدُوْنَ ۙ (44)	لِيَجْزِيَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
नेक	तो अपने ही नफ़्सों के लिए	वो राह हमवार कर रहे हैं	ताकि वो बदला दे	उनको जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْكٰفِرِيْنَ (45)
और उन्होंने अमल किए	नेक	अपने फ़ज़्ल से	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	काफ़िरों को

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ	اَنْ	يُّرْسِلَ	الرِّيَاحَ	مُبَشِّرٰتٍ	وَّلِيُذِيْقَكُمْ
और उसकी निशानियों में से है	कि	वो भेजता है	हवाएं	ख़ुशख़बरी देने वालियां	और ताकि वो चखाए तुम्हें

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ	وَلِتَجْرِيَ	الْفُلْكُ	بِاَمْرِهٖ	وَلِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ
अपनी रहमत से	और ताकि चलें	कश्तियां	उसके हुक्म से	और ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल में से

وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ (46)	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	رُسُلًا
और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	आपसे पहले	कई रसूलों को

اِلٰى قَوْمِهِمْ	فَجَآءُوْهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَانْتَقَمْنَا	مِنَ الَّذِيْنَ	اَجْرَمُوْا ؕ
तरफ़ उनकी क़ौम के	तो वो लाए उनके पास	वाज़ेह निशानियां	तो इंतिक़ाम लिया हमने	उनसे जिन्होंने	जुर्म किया

وَكَانَ	حَقًّا	عَلَيْنَا	نَصْرُ	الْمُؤْمِنِيْنَ (47)	اَللّٰهُ	الَّذِيْ	يُرْسِلُ
और है	हक़	हम पर	मदद करना	मोमिनों की	अल्लाह	वो है जो	भेजता है

الرِّيٰحَ	فَتُثِيْرُ	سَحَابًا	فَيَبْسُطُهٗ	فِي السَّمَآءِ	كَيْفَ	يَشَآءُ
हवाओं को	तो वो उठाती हैं	बादल	फिर वो फैला देता है उसे	आसमान में	जिस तरह	वो चाहता है

وَيَجْعَلُهٗ	كِسَفًا	فَتَرَى	الْوَدْقَ	يَخْرُجُ	مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ	فَاِذَآ
और वो कर देता है उसे	टुकड़ियों में	तो आप देखते हैं	बारिश को	वो निकलती है	उसके अंदर से	फिर जब

اَصَابَ	بِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖٓ	اِذَا	هُمْ	يَسْتَبْشِرُوْنَ (48) ۚ
वो पहुंचाता है	उसे	जिसे	वो चाहता है	अपने बंदों में से	यकायक	वो	वो ख़ुश हो जाते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ قَبْلِهٖ	عَلَيْهِمْ	يُّنَزَّلَ	اَنْ	مِنْ قَبْلِ	كَانُوْا	وَاِنْ
इससे पहले ही	उन पर	वो बरसाई जाए	कि	इससे पहले	थे वो	और बेशक

يُحْيِ	كَيْفَ	رَحْمَتِ اللّٰهِ	اِلٰٓى اٰثٰرِ	فَانْظُرْ	لَمُبْلِسِيْنَ (49)
वो ज़िंदा करता है	किस तरह	अल्लाह की रहमत के	तरफ़ आसार के	तो देखो	यक़ीनन मायूस होने वाले

وَهُوَ	الْمَوْتٰى ج	لَمُحْيِ	ذٰلِكَ	اِنَّ	مَوْتِهَا ط	بَعْدَ	الْاَرْضَ
और वो	मुर्दों को	अलबत्ता ज़िंदा करने वाला है	वो ही	बेशक	उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को

فَرَاَوْهُ	رِيْحًا	اَرْسَلْنَا	وَلَئِنْ	قَدِيْرٌ (50)	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى
फिर वो देखें उस (खेती) को	हवा को	भेजें हम	और अलबत्ता अगर	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर

الْمَوْتٰى	لَا تُسْمِعُ	فَاِنَّكَ	يَكْفُرُوْنَ (51)	مِنْ بَعْدِهٖ	لَّظَلُّوْا	مُصْفَرًّا
मुर्दों को	नहीं आप सुना सकते	पस बेशक आप	वो नाशुक्री करने	बाद इसके	अलबत्ता लगें वो	ज़र्द पड़ी हुई

وَمَآ	مُدْبِرِيْنَ (52)	وَلَّوْا	اِذَا	الدُّعَآءَ	الصُّمَّ	تُسْمِعُ	وَلَا
और नहीं	पीठ फेरते हुए	वो मुंह मोड़ जाएँ	जब	पुकार	बहरों को	आप सुना सकते	और ना

مَنْ	اِلَّا	تُسْمِعُ	اِنْ	عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ط	الْعُمْيِ	بِهٰدِ	اَنْتَ
उसे जो	मगर	आप सुना सकते	नहीं	उनकी गुमराही से	अंधों को	हिदायत देने वाले	आप

خَلَقَكُمْ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ	مُّسْلِمُوْنَ (53) ع	فَهُمْ	بِاٰيٰتِنَا	يُّؤْمِنُ
पैदा किया तुम्हें	वो है जिसने	अल्लाह	फ़रमांबरदार हों	फिर वो	हमारी आयात पर	ईमान रखता हो

جَعَلَ	ثُمَّ	قُوَّةً	ضُعْفٍ	مِنْ بَعْدِ	جَعَلَ	ثُمَّ	مِّنْ ضُعْفٍ
उसने बनाई	फिर	क़ुव्वत	कमज़ोरी के	बाद	उसने बनाई	फिर	कमज़ोरी से

وَهُوَ	يَشَآءُ ج	مَا	يَخْلُقُ	وَّشَيْبَةً ط	ضُعْفًا	قُوَّةٍ	مِنْ بَعْدِ
और वो ही है	वो चाहता है	जो	वो पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी	क़ुव्वत के	बाद

ع 13 5 8

قرء حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختار 12

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُقْسِمُ	السَّاعَةُ	تَقُوْمُ	وَيَوْمَ	الْقَدِيْرُ ﴿54﴾	الْعَلِيْمُ
क़समें खाऐंगे	क़यामत	क़ायम होगी	और जिस दिन	बहुत क़ुदरत रखने वाला	ख़ूब जानने वाला

كَانُوْا	كَذٰلِكَ	سَاعَةٍ ؕ	غَيْرَ	لَبِثُوْا	مَا	الْمُجْرِمُوْنَ ۙ
थे वो	इसी तरह	एक घड़ी के	सिवाए	वो ठहरे	नहीं	मुजरिम

لَقَدْ	وَالْاِيْمَانَ	الْعِلْمَ	اُوْتُوا	الَّذِيْنَ	وَقَالَ	يُؤْفَكُوْنَ ﴿55﴾
अलबत्ता तहक़ीक़	और ईमान	इल्म	दिए गए	वो लोग जो	और कहेंगे	वो फेरे जाते

الْبَعْثِ	يَوْمُ	فَهٰذَا	اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ؗ	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ	لَبِثْتُمْ
दोबारा उठने का	दिन	तो ये है	दोबारा उठने के दिन तक	अल्लाह की किताब में	ठहरे रहे तुम

الَّذِيْنَ	لَا يَنْفَعُ	فَيَوْمَئِذٍ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿56﴾	كُنْتُمْ	وَلٰكِنَّكُمْ
उनको जिन्होंने	ना नफ़ा देगी	तो उस दिन	ना तुम जानते	थे तुम	और लेकिन तुम

ضَرَبْنَا	وَلَقَدْ	يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿57﴾	هُمْ	وَلَا	مَعْذِرَتُهُمْ	ظَلَمُوْا
बयान की हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	वो तौबा तलब किए जाऐंगे	वो	और ना	मअज़रत उनकी	ज़ुल्म किया

جِئْتَهُمْ	وَلَئِنْ	مَثَلٍ ؕ	مِنْ كُلِّ	فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ	لِلنَّاسِ
लाऐं आप उनके पास	और अलबत्ता अगर	मिसाल	हर तरह की	इस क़ुरआन में	लोगों के लिए

مُبْطِلُوْنَ ﴿58﴾	اِلَّا	اَنْتُمْ	اِنْ	كَفَرُوْٓا	الَّذِيْنَ	لَيَقُوْلَنَّ	بِاٰيَةٍ
बातिल परस्त	मगर	हो तुम	नहीं	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	अलबत्ता ज़रूर कहेंगे	कोई निशानी

فَاصْبِرْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿59﴾	الَّذِيْنَ	عَلٰى قُلُوْبِ	اللّٰهُ	يَطْبَعُ	كَذٰلِكَ
पस सब्र कीजिए	नहीं वो इल्म रखते	उन लोगों के जो	दिलों पर	अल्लाह	मोहर लगा देता है	इसी तरह

لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿60﴾ ع	الَّذِيْنَ	وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ	حَقٌّ	اللّٰهِ	وَعْدَ	اِنَّ
नहीं वो यक़ीन रखते	वो लोग जो	और हरगिज़ ना हल्का पाऐं आपको	सच्चा है	अल्लाह का	वादा	बेशक

ع 6 7 9

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰیَاتُهَا: 34 — 31 سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ 57 — رُكُوْعَاتُهَا: 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ① ج	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ	الْحَكِيْمِ ② لا	هُدًى	وَّرَحْمَةً
الٓمّٓ	ये	आयात हैं	किताब	हिक्मत वाली की	हिदायत	और रहमत है

لِّلْمُحْسِنِيْنَ ③ لا	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَهُمْ
मोहसिनीन/नेकोकारों के लिए	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो अदा करते हैं	ज़कात	और वो

بِالْاٰخِرَةِ	هُمْ	يُوْقِنُوْنَ ④ ط	اُولٰٓئِكَ	عَلٰى هُدًى	مِّنْ رَّبِّهِمْ	وَاُولٰٓئِكَ
आख़िरत पर	वो	वो यक़ीन रखते हैं	यही लोग हैं	हिदायत पर	अपने रब की तरफ़ से	और यही लोग हैं

هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ⑤	وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ	يَّشْتَرِيْ	لَهْوَ	الْحَدِيْثِ
वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	और लोगों में से कोई है	जो	ख़रीदता है	खेल तमाशा (वाली)	बात

لِيُضِلَّ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ۖ ق	وَّيَتَّخِذَهَا	هُزُوًا ط
ताकि वो भटका दे	अल्लाह के रास्ते से	बग़ैर	इल्म के	और वो बनाता है उसे	मज़ाक़

اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	عَذَابٌ	مُّهِيْنٌ ⑥	وَاِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِ	اٰيٰتُنَا
यही लोग हैं	उनके लिए	अज़ाब है	ज़लील करने वाला	और जब	पढ़ी जाती हैं	उस पर	आयात हमारी

وَلّٰى	مُسْتَكْبِرًا	كَاَنْ	لَّمْ	يَسْمَعْهَا	كَاَنَّ	فِيْٓ اُذُنَيْهِ
वो मुंह मोड़ लेता है	तकब्बुर करते हुए	गोया कि	नहीं	उसने सुना उन्हें	गोया कि	उसके दोनों कानों में

وَقْرًا ج	فَبَشِّرْهُ	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ⑦	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
कोई बोझ है	तो ख़ुशख़बरी दे दीजिए उसे	अज़ाब	दर्दनाक की	बेशक	वो जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَهُمْ	جَنّٰتُ	النَّعِيْمِ ⑧ لا	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ط
और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए	बाग़ात हैं	नेअमतों वाले	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقًّا ؕ	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ⑨	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ
वादा है	अल्लाह का	सच्चा	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	उसने पैदा किया	आसमानों को

بِغَيْرِ	عَمَدٍ	تَرَوْنَهَا	وَاَلْقٰى	فِى الْاَرْضِ	رَوَاسِىَ	اَنْ
बग़ैर	सुतूनों के	तुम देखते हो उन्हें	और उसने डाल दिए	ज़मीन में	पहाड़	कि

تَمِيْدَ	بِكُمْ	وَبَثَّ	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	دَآبَّةٍ ؕ	وَاَنْزَلْنَا
(ना) वो ढुलक जाए	तुम्हें लेकर	और उसने फैला दिए	उसमें	हर क़िस्म के	जानदार	और उतारा हमने

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَنْۢبَتْنَا	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	زَوْجٍ	كَرِيْمٍ ⑩
आसमान से	पानी	फिर उगाए हमने	उसमें	हर क़िस्म के	जोड़े	उम्दा

هٰذَا	خَلْقُ	اللّٰهِ	فَاَرُوْنِىْ	مَاذَا	خَلَقَ	الَّذِيْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ ؕ
ये है	तख़्लीक़	अल्लाह की	तो दिखाओ मुझे	क्या कुछ	पैदा किया	उन लोगों ने जो	उसके सिवा हैं

بَلِ	الظّٰلِمُوْنَ	فِىْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ⑪ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	لُقْمٰنَ
बल्कि	ज़ालिम लोग	गुमराही में हैं	खुली-खुली	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	लुक़मान को

ع 1 11 10

الْحِكْمَةَ	اَنِ	اشْكُرْ	لِلّٰهِ ؕ	وَمَنْ	يَّشْكُرْ	فَاِنَّمَا	يَشْكُرُ
हिक्मत	ये कि	शुक्र करो	अल्लाह का	और जो	शुक्र करे	तो बेशक	वो शुक्र करता है

لِنَفْسِهٖ ج	وَمَنْ	كَفَرَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَنِىٌّ	حَمِيْدٌ ⑫	وَاِذْ
अपने ही नफ़्स के लिए	और जो	नाशुक्री करे	तो बेशक	अल्लाह	बहुत बेनियाज़ है	ख़ूब तारीफ़ वाला है	और जब

قَالَ	لُقْمٰنُ	لِابْنِهٖ	وَهُوَ	يَعِظُهٗ	يٰبُنَىَّ	لَا تُشْرِكْ
कहा	लुक़मान ने	अपने बेटे से	जबकि वो	वो नसीहत कर रहा था उसे	ऐ मेरे बेटे	ना तू शरीक ठहरा

بِاللّٰهِ ؕ	اِنَّ	الشِّرْكَ	لَظُلْمٌ	عَظِيْمٌ ⑬	وَوَصَّيْنَا	الْاِنْسَانَ
साथ अल्लाह के	बेशक	शिर्क	यक़ीनन ज़ुल्म है	बहुत बड़ा	और ताकीद की हमने	इंसान को

وقف النبى صلى الله عليه وسلم

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النصف

بِوَالِدَيْهِ ۚ	حَمَلَتْهُ	اُمُّهٗ	وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ	وَّفِصٰلُهٗ
साथ अपने वालिदैन के (एहसान की)	उठाया उसको	उसकी मां ने	कमज़ोरी पर कमज़ोरी (सहते हुए)	और दूध छुड़ाना हुआ उसका

فِیْ عَامَيْنِ	اَنِ	اشْكُرْ	لِیْ	وَلِوَالِدَيْكَ ؕ	اِلَیَّ	الْمَصِيْرُ (14)
दो साल में	कि	शुक्र करो	मेरा	और अपने वालिदैन का	तरफ़ मेरे ही	लौटना है

وَاِنْ	جَاهَدٰكَ	عَلٰٓى	اَنْ	تُشْرِكَ	بِیْ	مَا	لَيْسَ
और अगर	दोनों कोशिश करें तुम्हारे साथ	इस पर	कि	तुम शरीक करो	मेरे साथ	उसे जो	नहीं

لَكَ	بِهٖ	عِلْمٌ ۙ	فَلَا	تُطِعْهُمَا	وَصَاحِبْهُمَا	فِی الدُّنْيَا
तुम्हें	जिसका	कोई इल्म	तो ना	तुम इताअत करो उन दोनों की	और साथ रहो उन दोनों के	दुनिया में

مَعْرُوْفًا ؗ	وَّاتَّبِعْ	سَبِيْلَ	مَنْ	اَنَابَ	اِلَیَّ ۚ	ثُمَّ	اِلَیَّ
भले तरीक़े से	और पैरवी करो	रास्ते की	उसके जो	रुजूअ करे	मेरी तरफ़	फिर	तरफ़ मेरे ही

مَرْجِعُكُمْ	فَاُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ (15)	يٰبُنَیَّ	اِنَّهَآ
लौटना है तुम्हारा	फिर मैं बताऊंगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	तुम अमल करते	ऐ मेरे बेटे	बेशक वो

اِنْ	تَكُ	مِثْقَالَ	حَبَّةٍ	مِّنْ خَرْدَلٍ	فَتَكُنْ	فِیْ صَخْرَةٍ	اَوْ
अगर	हो वो (शै)	वज़न बराबर	दाने	राई के	फिर हो वो	किसी चट्टान में	या

فِی السَّمٰوٰتِ	اَوْ	فِی الْاَرْضِ	يَاْتِ	بِهَا	اللّٰهُ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
आसमानों में	या	ज़मीन में	ले आएगा	उसे	अल्लाह	बेशक	अल्लाह

لَطِيْفٌ	خَبِيْرٌ (16)	يٰبُنَیَّ	اَقِمِ	الصَّلٰوةَ	وَاْمُرْ	بِالْمَعْرُوْفِ
बहुत बारीक बीन है	ख़ूब बाख़बर है	ऐ मेरे बेटे	क़ायम करो	नमाज़	और हुक्म दो	नेकी का

وَانْهَ	عَنِ الْمُنْكَرِ	وَاصْبِرْ	عَلٰى	مَآ	اَصَابَكَ ؕ	اِنَّ	ذٰلِكَ
और रोको	बुराई से	और सब्र करो	उस पर	जो	पहुंचे तुझे	बेशक	ये है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ⑰ ج	وَلَا	تُصَعِّرْ	خَدَّكَ	لِلنَّاسِ	وَلَا	تَمْشِ
हिम्मत के कामों में से	और ना	तुम मोड़ो	अपना गाल	लोगों से	और ना	तुम चलो

فِي الْاَرْضِ	مَرَحًا ط	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	كُلَّ	مُخْتَالٍ	فَخُوْرٍ ⑱ ج
ज़मीन में	अकड़ कर/इतरा कर	बेशक	अल्लाह	नहीं वो पसंद करता	हर	खुद पसंद	फ़ख़र जताने वाले को

وَاقْصِدْ	فِيْ مَشْيِكَ	وَاغْضُضْ	مِنْ صَوْتِكَ ط	اِنَّ	اَنْكَرَ
और मयानारवी इख़्तियार करो	अपनी चाल में	और पस्त रखो	अपनी आवाज़ को	बेशक	सबसे ज़्यादा नापसंदीदा

ع 2 8 11

الْاَصْوَاتِ	لَصَوْتُ	الْحَمِيْرِ ⑲ ع	اَلَمْ	تَرَوْا	اَنَّ	اللّٰهَ	سَخَّرَ
आवाज़ों में से	अलबत्ता आवाज़ है	गधे की	क्या नहीं	तुमने देखा	बेशक	अल्लाह ने	मुसख़्ख़र किया

لَكُمْ	مَّا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ	وَاَسْبَغَ	عَلَيْكُمْ
तुम्हारे लिए	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और उसने तमाम कर दीं	तुम पर

نِعَمَهٗ	ظَاهِرَةً	وَّبَاطِنَةً ط	وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ	يُّجَادِلُ
नेअमतें अपनी	ज़ाहिरी	और बातिनी	और लोगों में से कोई है	जो	झगड़ता है

فِي اللّٰهِ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ	وَّلَا	هُدًى	وَّلَا	كِتٰبٍ	مُّنِيْرٍ ⑳	وَاِذَا
अल्लाह के बारे में	बग़ैर	इल्म के	और बग़ैर	हिदायत के	और बग़ैर	किताब	रोशन के	और जब

قِيْلَ	لَهُمُ	اتَّبِعُوْا	مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	قَالُوْا	بَلْ
कहा जाता है	उन्हें	पैरवी करो	उसकी जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	वो कहते हैं	बल्कि

نَتَّبِعُ	مَا	وَجَدْنَا	عَلَيْهِ	اٰبَآءَنَا ط	اَوَلَوْ	كَانَ	الشَّيْطٰنُ
हम पैरवी करेंगे	उसकी जो	पाया हमने	उस पर	अपने आबा ओ अजदाद को	क्या भला अगर	हो	शैतान

يَدْعُوْهُمْ	اِلٰى عَذَابِ	السَّعِيْرِ ㉑	وَمَنْ	يُّسْلِمْ	وَجْهَهٗٓ	اِلَى اللّٰهِ
वो बुलाता उन्हें	तरफ़ अज़ाब के	भड़कती हुई आग के	और जो कोई	सुपुर्द कर दे	चेहरा अपना	तरफ़ अल्लाह के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَهُوَ	مُحْسِنٌ	فَقَدِ	اسْتَمْسَكَ	بِالْعُرْوَةِ	الْوُثْقٰى ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ
और वो	मोहसिन भी हो	तो यक़ीनन	उसने थाम लिया	कड़ा	मज़बूत	और तरफ़ अल्लाह ही के

عَاقِبَةُ	الْاُمُوْرِ ﴿22﴾	وَمَنْ	كَفَرَ	فَلَا	يَحْزُنْكَ	كُفْرُهٗ ؕ	اِلَيْنَا
अंजाम है	सब कामों का	और जिसने	कुफ़्र किया	पस ना	ग़मगीन करे आपको	कुफ़्र उसका	तरफ़ हमारे ही

مَرْجِعُهُمْ	فَنُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	عَمِلُوْا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ
लौटना है उनका	फिर हम बताऐंगे उन्हें	वो जो	उन्होंने अमल किए	बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿23﴾	نُمَتِّعُهُمْ	قَلِيْلًا	ثُمَّ	نَضْطَرُّهُمْ	اِلٰى عَذَابٍ
सीनों वाले (भेद)	हम फ़ायदा देंगे उन्हें	थोड़ा सा	फिर	हम मजबूर करेंगे उन्हें	तरफ़ अज़ाब

غَلِيْظٍ ﴿24﴾	وَلَئِنْ	سَاَلْتَهُمْ	مَّنْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ
सख़्त के	और अलबत्ता अगर	पूछें आप उनसे	किसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को

لَيَقُوْلُنَّ	اللّٰهُ ؕ	قُلِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ ؕ	بَلْ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿25﴾
अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	अल्लाह ने	कह दीजिए	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	बल्कि	अक्सर उनके	वो इल्म नहीं रखते

لِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الْغَنِيُّ
अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और ज़मीन में	बेशक	अल्लाह	वो ही है	बहुत बेनियाज़

الْحَمِيْدُ ﴿26﴾	وَلَوْ	اَنَّ	مَا	فِي الْاَرْضِ	مِنْ شَجَرَةٍ	اَقْلَامٌ
ख़ूब तारीफ़ वाला	और अगर	बेशक	जो भी	ज़मीन में	दरख़्त हैं	क़लमे हों

وَّالْبَحْرُ	يَمُدُّهٗ	مِنْ بَعْدِهٖ	سَبْعَةُ	اَبْحُرٍ	مَّا	نَفِدَتْ
और समुन्दर (स्याही हो)	बढ़ाऐं उसको	बाद इसके	सात	और (समुन्दर)	ना	ख़त्म होंगे

كَلِمٰتُ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ ﴿27﴾	مَا	خَلْقُكُمْ	وَلَا
कलिमात	अल्लाह के	बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	नहीं	पैदा करना तुम्हारा	और ना

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

بَعۡثُكُمۡ	اِلَّا	كَنَفۡسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَمِيۡعٌۢ	بَصِيۡرٌ (28)
दोबारा उठना तुम्हारा	मगर	एक जान की तरह	बेशक	अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब देखने वाला है

اَلَمۡ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	يُوۡلِجُ	الَّيۡلَ	فِى النَّهَارِ	وَيُوۡلِجُ
क्या नहीं	आपने देखा	बेशक	अल्लाह	वो दाख़िल करता है	रात को	दिन में	और वो दाख़िल करता है

النَّهَارَ	فِى الَّيۡلِ	وَسَخَّرَ	الشَّمۡسَ	وَالۡقَمَرَ ۖ	كُلٌّ	يَّجۡرِىۡۤ
दिन को	रात में	और उसने मुसख़्ख़र कर दिया	सूरज	और चांद को	हर एक	चल रहा है

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى	وَّاَنَّ	اللّٰهَ	بِمَا	تَعۡمَلُوۡنَ	خَبِيۡرٌ (29)	ذٰلِكَ
एक मुक़र्रर वक़्त तक	और बेशक	अल्लाह	उससे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब बाख़बर है	ये

بِاَنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الۡحَقُّ	وَاَنَّ	مَا	يَدۡعُوۡنَ	مِنۡ دُوۡنِهِ
बवजह इसके कि	अल्लाह	वो ही है	हक़	और बेशक	जिसे	वो पुकारते हैं	उसके सिवा

الۡبَاطِلُ ۙ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الۡعَلِىُّ	الۡكَبِيۡرُ (30) ع	اَلَمۡ	تَرَ
बातिल है	और बेशक	अल्लाह	वो ही है	बुलंदतर	बहुत बड़ा	क्या नहीं	आपने देखा

ع 3 11 12

اَنَّ	الۡفُلۡكَ	تَجۡرِىۡ	فِى الۡبَحۡرِ	بِنِعۡمَتِ	اللّٰهِ	لِيُرِيَكُمۡ
बेशक	कश्तियां	चलती हैं	समुन्दर में	साथ नेअमत के	अल्लाह की	ताकि वो दिखाए तुम्हें

مِّنۡ اٰيٰتِهٖ ؕ	اِنَّ	فِىۡ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّكُلِّ	صَبَّارٍ	شَكُوۡرٍ (31)
अपनी निशानियों में से	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	वास्ते हर	बहुत सब्र करने वाले	बहुत शुक्र गुज़ार के

وَاِذَا	غَشِيَهُمۡ	مَّوۡجٌ	كَالظُّلَلِ	دَعَوُا	اللّٰهَ	مُخۡلِصِيۡنَ	لَهُ
और जब	छा जाती है उन पर	एक मौज	सायबानों की तरह	वो पुकारते हैं	अल्लाह को	ख़ालिस करने वाले होकर	उसके लिए

الدِّيۡنَ ۚ	فَلَمَّا	نَجّٰىهُمۡ	اِلَى الۡبَرِّ	فَمِنۡهُمۡ	مُّقۡتَصِدٌ ؕ
दीन को	तो जब	वो निजात देता है उन्हें	तरफ़ ख़ुश्की के	तो उनमें से बाज़	सीधी राह पर क़ायम रहने वाले हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	يَجْحَدُ	بِاٰيٰتِنَآ	اِلَّا	كُلُّ	خَتَّارٍ	كَفُوْرٍ ﴿32﴾	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
और नहीं	इंकार करता	हमारी आयात का	मगर	हर	बहुत अहद शिकन	इंतिहाई नाशुक्रा	ऐ लोगो

اتَّقُوْا	رَبَّكُمْ	وَاخْشَوْا	يَوْمًا	لَّا يَجْزِيْ	وَالِدٌ	عَنْ وَّلَدِهٖ ۫
डरो	अपने रब से	और डरो	उस दिन से	ना काम आएगा	कोई बाप	अपने बच्चे के

وَلَا	مَوْلُوْدٌ	هُوَ	جَازٍ	عَنْ وَّالِدِهٖ	شَيْـًٔا ۭ	اِنَّ	وَعْدَ
और ना ही	कोई बच्चा	वो	काम आने वाला है	अपने बाप की तरफ़ से	कुछ भी	यक़ीनन	वादा

اللّٰهِ	حَقٌّ	فَلَا	تَغُرَّنَّكُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا ۪ وقفة	وَلَا
अल्लाह का	सच्चा है	तो ना	हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	ज़िंदगी	दुनिया की	और ना

يَغُرَّنَّكُمْ	بِاللّٰهِ	الْغَرُوْرُ ﴿33﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗ	عِلْمُ
हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	अल्लाह के बारे में	बड़ा धोखे बाज़	बेशक	अल्लाह	उसके पास	इल्म है

السَّاعَةِ ۚ	وَيُنَزِّلُ	الْغَيْثَ ۚ	وَيَعْلَمُ	مَا	فِي الْاَرْحَامِ ۭ	وَمَا
क़यामत का	और वो बरसाता है	बारिश को	और वो जानता है	जो कुछ	रहमों में है	और नहीं

تَدْرِيْ	نَفْسٌ	مَّاذَا	تَكْسِبُ	غَدًا ۭ	وَمَا	تَدْرِيْ	نَفْسٌۢ
जानता	कोई नफ़्स	क्या कुछ	वो कमाई करेगा	कल	और नहीं	जानता	कोई नफ़्स

ع 4 4 13

بِاَيِّ	اَرْضٍ	تَمُوْتُ ۭ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	خَبِيْرٌ ﴿34﴾ ع
कि किस	ज़मीन पर	वो मरेगा	बेशक	अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	ख़ूब बाख़बर है

اٰيَاتُهَا: 30 — 32 سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ 75 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿1﴾ ۚ	تَنْزِيْلُ	الْكِتٰبِ	لَا رَيْبَ	فِيْهِ	مِنْ رَّبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾ ۭ
الٓمّٓ	नाज़िल करना है	किताब का	नहीं कोई शक	इसमें	रब की तरफ़ से है	तमाम जहानों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِتُنْذِرَ	مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	هُوَ	بَلْ	افْتَرٰىهُ ۚ	يَقُوْلُوْنَ	اَمْ
ताकि आप डराएं	आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	वो	बल्कि	उसने गढ़ लिया है उसे	वो कहते हैं	क्या

يَهْتَدُوْنَ ③	لَعَلَّهُمْ	مِّنْ قَبْلِكَ	مِّنْ نَّذِيْرٍ	اَتٰىهُمْ	مَّآ	قَوْمًا
वो हिदायत पा जाएं	ताकि वो	आपसे पहले	कोई डराने वाला	आया उनके पास	नहीं	उस क़ौम को

بَيْنَهُمَا	وَمَا	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ
दर्मियान है इन दोनों के	और जो कुछ	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	वो जिसने	अल्लाह

لَكُمْ	مَا	عَلَى الْعَرْشِ ۗ	اسْتَوٰى	ثُمَّ	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
तुम्हारे लिए	नहीं	अर्श पर	वो बुलंद हुआ	फिर	छः दिनों में

يُدَبِّرُ	تَتَذَكَّرُوْنَ ④	اَفَلَا	شَفِيْعٍ ۗ	وَّلَا	مِنْ وَّلِيٍّ	مِّنْ دُوْنِهٖ
वो तदबीर करता है	तुम नसीहत पकड़ते	क्या फिर नहीं	कोई सिफ़ारिशी	और ना	कोई दोस्त	उसके सिवा

فِيْ يَوْمٍ	اِلَيْهِ	يَعْرُجُ	ثُمَّ	اِلَى الْاَرْضِ	مِنَ السَّمَآءِ	الْاَمْرَ
एक दिन में	तरफ़ उसके	वो चढ़ता है	फिर	ज़मीन तक	आसमान से	हर मामले की

عٰلِمُ	ذٰلِكَ	تَعُدُّوْنَ ⑤	مِّمَّا	سَنَةٍ	اَلْفَ	مِقْدَارُهٗٓ	كَانَ
जानने वाला	ये है	तुम शुमार करते हो	उसमें से जो	साल	हज़ार	हिसाब/अंदाज़ा उसका	है

كُلَّ	اَحْسَنَ	الَّذِيْٓ	الرَّحِيْمُ ⑥ ۙ	الْعَزِيْزُ	وَالشَّهَادَةِ	الْغَيْبِ
हर	अच्छा बनाया	वो जिसने	निहायत रहम करने वाला	बहुत ज़बरदस्त	और हाज़िर का	ग़ैब

جَعَلَ	ثُمَّ	مِنْ طِيْنٍ ⑦ ۚ	خَلْقَ الْاِنْسَانِ	وَبَدَاَ	خَلَقَهٗ	شَيْءٍ
उसने बनाई	फिर	मिट्टी से	इंसान की तख़लीक़ की	और उसने इब्तिदा की	उसने पैदा किया जिसे	चीज़ को

وَنَفَخَ	سَوّٰىهُ	ثُمَّ	مَّهِيْنٍ ⑧ ۚ	مِّنْ مَّآءٍ	مِنْ سُلٰلَةٍ	نَسْلَهٗ
और उसने फूंक दिया	उसने दुरुस्त किया उसे	फिर	कमज़ोर/हक़ीर	पानी के	ख़ुलासे से	नस्ल उसकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ	وَالْاَبْصَارَ	السَّمْعَ	لَكُمُ	وَجَعَلَ	مِنْ رُّوْحِهٖ	فِيْهِ
और दिल	और आंखें	कान	तुम्हारे लिए	और उसने बनाए	अपनी रूह से	उसमें

فِي الْاَرْضِ	ضَلَلْنَا	ءَاِذَا	وَقَالُوْٓا	تَشْكُرُوْنَ (9)	قَلِيْلًا مَّا
ज़मीन में	गुम हो जाएंगे हम	क्या जब	और उन्होंने कहा	तुम शुक्र अदा करते हो	कितना कम

رَبِّهِمْ	بِلِقَآءِ	هُمْ	بَلْ	جَدِيْدٍ ؕ	لَفِيْ خَلْقٍ	ءَاِنَّا
अपने रब की	मुलाक़ात से	वो	बल्कि	नई	अलबत्ता पैदाइश में (होंगे)	क्या बेशक हम

وُكِّلَ	الَّذِيْ	الْمَوْتِ	مَّلَكُ	يَتَوَفّٰىكُمْ	قُلْ	كٰفِرُوْنَ (10)
मुक़र्रर किया गया	वो जो	मौत का	फ़रिश्ता	फ़ौत करेगा तुम्हें	कह दीजिए	इंकारी हैं

ع 1 11 14

الْمُجْرِمُوْنَ	اِذِ	تَرٰٓى	وَلَوْ	تُرْجَعُوْنَ (11) ع	اِلٰى رَبِّكُمْ	ثُمَّ	بِكُمْ
मुजरिम	जब	आप देखें	और काश	तुम लौटाए जाओगे	तरफ़ अपने रब के	फिर	तुम पर

وَسَمِعْنَا	اَبْصَرْنَا	رَبَّنَآ	عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ	رُءُوْسِهِمْ	نَاكِسُوْا
और सुन लिया हमने	देख लिया हमने	ऐ हमारे रब	अपने रब के पास (कहेंगे)	अपने सरों को	झुकाए हुए होंगे

شِئْنَا	وَلَوْ	مُوْقِنُوْنَ (12)	اِنَّا	صَالِحًا	نَعْمَلْ	فَارْجِعْنَا
चाहते हम	और अगर	यक़ीन करने वाले हैं	बेशक हम	नेक	हम अमल करेंगे	पस लौटा दे हमें

مِنِّيْ	الْقَوْلُ	حَقَّ	وَلٰكِنْ	هُدٰىهَا	نَفْسٍ	كُلَّ	لَاٰتَيْنَا
मेरी तरफ़ से	बात	सच हो गई	और लेकिन	हिदायत उसकी	नफ़्स को	हर	अलबत्ता दे देते हम

فَذُوْقُوْا	اَجْمَعِيْنَ (13)	وَالنَّاسِ	مِنَ الْجِنَّةِ	جَهَنَّمَ	لَاَمْلَـَٔنَّ
तो चखो	सबके सबसे	और इंसानों से	जिन्नों से	जहन्नम को	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूंगा

وَذُوْقُوْا	نَسِيْنٰكُمْ	اِنَّا	يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ	لِقَآءَ	نَسِيْتُمْ	بِمَا
और चखो	भुला दिया हमने तुम्हें	बेशक हमने	अपने इस दिन की	मुलाक़ात को	भूल गए तुम	बवजह उसके जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَذَابَ	الْخُلْدِ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ (14)	اِنَّمَا	يُؤْمِنُ
अज़ाब	हमेशगी का	बवजह इसके जो	थे तुम	तुम अमल करते	बेशक	ईमान लाते हैं

بِاٰيٰتِنَا	الَّذِيْنَ	اِذَا	ذُكِّرُوْا	بِهَا	خَرُّوْا	سُجَّدًا
हमारी आयात पर	वो लोग	जब	वो नसीहत किए जाते हैं	साथ उनके	वो गिर पड़ते हैं	सज्दा करते हुए

السجدة 9

وَّسَبَّحُوْا	بِحَمْدِ	رَبِّهِمْ	وَهُمْ	لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (15) السجدة	تَتَجَافٰى
और वो तस्बीह करते हैं	साथ हम्द के	अपने रब की	और वो	नहीं वो तकब्बुर करते	अलग रहते हैं

جُنُوْبُهُمْ	عَنِ الْمَضَاجِعِ	يَدْعُوْنَ	رَبَّهُمْ	خَوْفًا	وَّطَمَعًا ز	وَّمِمَّا
पहलू उनके	बिस्तरों से	वो पुकारते हैं	अपने रब को	ख़ौफ़	और उम्मीद से	और उसमें से जो

رَزَقْنٰهُمْ	يُنْفِقُوْنَ (16)	فَلَا	تَعْلَمُ	نَفْسٌ	مَّآ	اُخْفِيَ
रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	वो ख़र्च करते हैं	पस नहीं	जानता	कोई नफ़्स	जो कुछ	छुपाया गया है

لَهُمْ	مِّنْ قُرَّةِ	اَعْيُنٍ ج	جَزَآءً م	بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (17)
उनके लिए	ठंडक से	आंखों की	बदला है	उसका जो	थे वो	वो अमल करते

وقف غفران

اَفَمَنْ	كَانَ	مُؤْمِنًا	كَمَنْ	كَانَ	فَاسِقًا ط	لَا يَسْتَوٗنَ (18)	اَمَّا
क्या भला वो जो	है	मोमिन	उसके मानिंद	हो सकता है	जो फ़ासिक़ है	नहीं वो बराबर हो सकते	रहे

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	فَلَهُمْ	جَنّٰتُ	الْمَاْوٰى ز	نُزُلًا م
वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	तो उनके लिए	बाग़ात हैं	रहने के	मेहमानी होगी

بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (19)	وَاَمَّا	الَّذِيْنَ	فَسَقُوْا	فَمَاْوٰىهُمُ	النَّارُ ط
बवजह उसके जो	थे वो	वो अमल करते	और रहे वो	जिन्होंने	नाफ़रमानी की	पस ठिकाना उनका	आग है

كُلَّمَآ	اَرَادُوْٓا	اَنْ	يَّخْرُجُوْا	مِنْهَآ	اُعِيْدُوْا	فِيْهَا	وَقِيْلَ
जब कभी	वो इरादा करेंगे	कि	वो निकल आऐं	उससे	वो लौटा दिए जाऐंगे	उसी में	और कह दिया जाएगा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	ذُوْقُوْا	عَذَابَ	النَّارِ	الَّذِیْ	كُنْتُمْ	بِهٖ	تُكَذِّبُوْنَ ﴿20﴾
उन्हें	चखो	अज़ाब	आग का	वो जो	थे तुम	जिसे	तुम झुठलाते

وَلَنُذِیْقَنَّهُمْ	مِّنَ الْعَذَابِ	الْاَدْنٰی	دُوْنَ	الْعَذَابِ	الْاَكْبَرِ
और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएँगे उन्हें	अज़ाब में से	कमतर/हल्का	इलावा	अज़ाब	बड़े के

لَعَلَّهُمْ	یَرْجِعُوْنَ ﴿21﴾	وَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ	ذُكِّرَ	بِاٰیٰتِ
शायद कि वो	वो लौट आएँ	और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	नसीहत किया गया	साथ आयात के

2 ع 11 15

رَبِّهٖ	ثُمَّ	اَعْرَضَ	عَنْهَا ؕ	اِنَّا	مِنَ الْمُجْرِمِیْنَ	مُنْتَقِمُوْنَ ﴿22﴾ ع
अपने रब की	फिर	उसने मुंह मोड़ लिया	उनसे	बेशक हम	मुजरिमों से	इंतिक़ाम लेने वाले हैं

وَلَقَدْ	اٰتَیْنَا	مُوْسَی	الْكِتٰبَ	فَلَا	تَكُنْ	فِیْ مِرْیَةٍ
और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	किताब	पस ना	आप हों	शक में

مِّنْ لِّقَآئِهٖ	وَجَعَلْنٰهُ	هُدًی	لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ﴿23﴾ ج	وَجَعَلْنَا
उसकी मुलाक़ात से	और बनाया हमने उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	और बनाए हमने

مِنْهُمْ	اَىِٕمَّةً	یَّهْدُوْنَ	بِاَمْرِنَا	لَمَّا	صَبَرُوْا ؕ۫	وَكَانُوْا
उनमें से	इमाम	जो रहनुमाई करते थे	हमारे हुक्म से	जब	उन्होंने सब्र किया	और थे वो

بِاٰیٰتِنَا	یُوْقِنُوْنَ ﴿24﴾	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	یَفْصِلُ	بَیْنَهُمْ	یَوْمَ
हमारी आयात पर	वो यक़ीन रखते	बेशक	रब आपका	वो ही	वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन

الْقِیٰمَةِ	فِیْمَا	كَانُوْا	فِیْهِ	یَخْتَلِفُوْنَ ﴿25﴾	اَوَلَمْ	یَهْدِ	لَهُمْ
क़यामत के	उसमें जो	थे वो	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते	क्या भला नहीं	रहनुमाई की	उनकी कि

كَمْ	اَهْلَكْنَا	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنَ الْقُرُوْنِ	یَمْشُوْنَ	فِیْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ
कितनी ही	हलाक कीं हमने	इनसे पहले	उम्मतें	वो चलते-फिरते हैं	उनके घरों में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ ؕ	اَفَلَا	يَسْمَعُوْنَ (26)	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّا
बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	क्या भला नहीं	वो सुनते	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक हम

نَسُوْقُ	الْمَآءَ	اِلَى الْاَرْضِ	الْجُرُزِ	فَنُخْرِجُ	بِهٖ	زَرْعًا
चलाते हैं हम	पानी को	तरफ़ ज़मीन	बंजर के	फिर हम निकालते हैं	साथ उसके	खेती को

الثلٰثة

تَاْكُلُ	مِنْهُ	اَنْعَامُهُمْ	وَاَنْفُسُهُمْ ؕ	اَفَلَا	يُبْصِرُوْنَ (27)	وَيَقُوْلُوْنَ
खाते हैं	उससे	उनके मवेशी	और वो ख़ुद भी	क्या भला नहीं	वो देखते	और वो कहते हैं

مَتٰى	هٰذَا	الْفَتْحُ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (28)	قُلْ	يَوْمَ	الْفَتْحِ
कब होगा	ये	फ़ैसला	अगर	हो तुम	सच्चे	कह दीजिए	दिन	फ़ैसले के

لَا يَنْفَعُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِيْمَانُهُمْ	وَلَا	هُمْ	يُنْظَرُوْنَ (29)
ना नफ़ा देगा	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	ईमान लाना उनका	और ना	वो	वो मोहलत दिए जाएंगे

ع 3 8 16

فَاَعْرِضْ	عَنْهُمْ	وَانْتَظِرْ	اِنَّهُمْ	مُّنْتَظِرُوْنَ (30) ع
पस ऐराज़ कीजिए	उनसे	और इंतिज़ार कीजिए	बेशक वो (भी)	इंतिज़ार करने वाले हैं

اٰيَاتُهَا: 73 — 33 سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ 90 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	اتَّقِ	اللّٰهَ	وَلَا	تُطِعِ	الْكٰفِرِيْنَ	وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ
ऐ	नबी	डरिए	अल्लाह से	और ना	आप इताअत कीजिए	काफ़िरों	और मुनाफ़िक़ों की

اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا (1) لا	وَّاتَّبِعْ	مَا	يُوْحٰٓى
बेशक	अल्लाह	है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला	और पैरवी कीजिए	उसकी जो	वही की जाती है

اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا (2) لا
तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	बेशक	अल्लाह	है	उसकी जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ط	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	وَكِيْلًا (3)	مَا	جَعَلَ	اللّٰهُ
और तवक्कुल कीजिए	अल्लाह पर	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	नहीं	बनाए	अल्लाह ने

لِرَجُلٍ	مِّنْ قَلْبَيْنِ	فِيْ جَوْفِهٖ ج	وَمَا	جَعَلَ	اَزْوَاجَكُمُ	الّٰٓـِٔيْ
किसी शख़्स के लिए	दो दिल	उसके सीने में	और नहीं	उसने बनाया	तुम्हारी बीवियों को	वो जो

تُظٰهِرُوْنَ	مِنْهُنَّ	اُمَّهٰتِكُمْ ج	وَمَا	جَعَلَ	اَدْعِيَآءَكُمْ	اَبْنَآءَكُمْ ط
तुम ज़िहार करते हो	जिनसे	मांऐं तुम्हारी	और नहीं	उसने बनाया	तुम्हारे मुंह बोले बेटों को	बेटे तुम्हारे

ذٰلِكُمْ	قَوْلُكُمْ	بِاَفْوَاهِكُمْ ط	وَاللّٰهُ	يَقُوْلُ	الْحَقَّ	وَهُوَ	يَهْدِي
ये	बात है तुम्हारी	तुम्हारे मुंहों से	और अल्लाह	फ़रमाता है	हक़	और वो ही	वो रहनुमाई करता है

السَّبِيْلَ (4)	اُدْعُوْهُمْ	لِاٰبَآئِهِمْ	هُوَ	اَقْسَطُ	عِنْدَ	اللّٰهِ ج
रास्ते की	पुकारो उन्हें	उनके बापों के (नाम) से	वो	ज़्यादा इंसाफ़ वाला है	नज़दीक	अल्लाह के

فَاِنْ	لَّمْ	تَعْلَمُوْٓا	اٰبَآءَهُمْ	فَاِخْوَانُكُمْ	فِي الدِّيْنِ	وَمَوَالِيْكُمْ ط
फिर अगर	नहीं	तुम जानते	उनके बापों को	तो भाई हैं तुम्हारे	दीन में	और दोस्त हैं तुम्हारे

وَلَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	فِيْمَآ	اَخْطَاْتُمْ	بِهٖ لا	وَلٰكِنْ	مَّا
और नहीं	तुम पर	कोई गुनाह	उस मामले में जो	ख़ता की तुमने	उसमें	लेकिन	जो

تَعَمَّدَتْ	قُلُوْبُكُمْ ط	وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (5)	اَلنَّبِيُّ
इरादा करें	दिल तुम्हारे	और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	नबी

اَوْلٰى	بِالْمُؤْمِنِيْنَ	مِنْ اَنْفُسِهِمْ	وَاَزْوَاجُهٗٓ	اُمَّهٰتُهُمْ ط
क़रीबतर है	मोमिनों के	उनके नफ़्सों से	और बीवियां उसकी	मांऐं हैं उनकी

وَاُولُوا الْاَرْحَامِ	بَعْضُهُمْ	اَوْلٰى	بِبَعْضٍ	فِيْ كِتٰبِ	اللّٰهِ
और रहम वाले (रिशतेदार)	बाज़ उनके	नज़दीकतर हैं	बाज़ के	किताब में	अल्लाह की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ	تَفْعَلُوْٓا	اَنْ	اِلَّآ	وَالْمُهٰجِرِيْنَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
तरफ़ अपने दोस्तों के	तुम करो	ये कि	मगर	और मुहाजिरीन में से	मोमिनों में से

اَخَذْنَا	وَاِذْ	مَسْطُوْرًا ⑥	فِي الْكِتٰبِ	ذٰلِكَ	كَانَ	مَّعْرُوْفًا ؕ
लिया हमने	और जब	लिखा हुआ	किताब में	ये	है	कोई भलाई

وَمُوْسٰى	وَّاِبْرٰهِيْمَ	وَمِنْ نُّوْحٍ	وَمِنْكَ	مِيْثَاقَهُمْ	مِنَ النَّبِيّٖنَ
और मूसा	और इब्राहीम	और नूह	और आपसे	पुख़्ता अहद उनका	नबियों से

لِّيَسْـَٔلَ	غَلِيْظًا ⑦ لا	مِّيْثَاقًا	مِنْهُمْ	وَاَخَذْنَا	وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ
ताकि वो सवाल करे	पुख़्ता/पक्का	अहद	उनसे	और लिया हमने	और ईसा इबने मरियम से

اَلِيْمًا ⑧ ع	عَذَابًا	لِلْكٰفِرِيْنَ	وَاَعَدَّ	عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ	الصّٰدِقِيْنَ
दर्दनाक	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उसने तैयार कर रखा है	उनके सच के बारे में	सच्चों से

ع 1 8 17

جَآءَتْكُمْ	اِذْ	عَلَيْكُمْ	اللّٰهِ	نِعْمَةَ	اذْكُرُوْا	اٰمَنُوا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
आए तुम्हारे पास	जब	अपने ऊपर	अल्लाह की	नेअमत	याद करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

تَرَوْهَا ؕ	لَّمْ	وَّجُنُوْدًا	رِيْحًا	عَلَيْهِمْ	فَاَرْسَلْنَا	جُنُوْدٌ
तुमने देखा उन्हें	नहीं	और कुछ लश्कर	एक आंधी	उन पर	तो भेजी हमने	कई लश्कर

جَآءُوْكُمْ	اِذْ	بَصِيْرًا ⑨ ج	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	اللّٰهُ	وَكَانَ
वो आए तुम पर	जब	ख़ूब देखने वाला	तुम अमल करते हो	उसे जो	अल्लाह	और है

وَبَلَغَتِ	الْاَبْصَارُ	زَاغَتِ	وَاِذْ	مِنْكُمْ	وَمِنْ اَسْفَلَ	مِّنْ فَوْقِكُمْ
और पहुंच गए	निगाहें	फिर गईं	और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर से

ابْتُلِيَ	هُنَالِكَ	الظُّنُوْنَا ⑩	بِاللّٰهِ	وَتَظُنُّوْنَ	الْحَنَاجِرَ	الْقُلُوْبُ
आज़माए गए	उस वक़्त	बहुत से गुमान	अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान कर रहे थे	गलों तक	दिल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُؤْمِنُوْنَ	وَزُلْزِلُوْا	زِلْزَالًا	شَدِيْدًا (11)	وَاِذْ	يَقُوْلُ	الْمُنٰفِقُوْنَ
सब मोमिन	और वो हिला मारे गए	हिला मारा जाना	शिद्दत का	और जब	कह रहे थे	मुनाफ़िक़

وَالَّذِيْنَ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	مَّرَضٌ	مَّا	وَعَدَنَا	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗٓ
और वो लोग	जिनके दिलों में	मर्ज़ है	नहीं	वादा किया हमसे	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने

اِلَّا	غُرُوْرًا (12)	وَاِذْ	قَالَتْ	طَّآئِفَةٌ	مِّنْهُمْ	يٰٓاَهْلَ	يَثْرِبَ
मगर	धोखे का	और जब	कहा	एक गिरोह ने	उनमें से	ऐ अहले	यसरब

لَا مُقَامَ	لَكُمْ	فَارْجِعُوْا ۚ	وَيَسْتَاْذِنُ	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمُ	النَّبِيَّ
नहीं कोई जगह ठहरने की	तुम्हारे लिए	पस लौट चलो	और इजाज़त मांग रहा था	एक गिरोह	उनमें से	नबी से

يَقُوْلُوْنَ	اِنَّ	بُيُوْتَنَا	عَوْرَةٌ ۛ	وَمَا	هِيَ	بِعَوْرَةٍ ۚۛ	اِنْ
वो कह रहे थे	बेशक	हमारे घर तो	ग़ैर महफ़ूज़ हैं	हालांकि नहीं थे	वो	ग़ैर महफ़ूज़	नहीं

يُّرِيْدُوْنَ	اِلَّا	فِرَارًا (13)	وَلَوْ	دُخِلَتْ	عَلَيْهِمْ	مِّنْ اَقْطَارِهَا
वो चाहते थे	मगर	फ़रार होना	और अगर	दाख़िल किए जाते	उन पर (लश्कर)	उनके अतराफ़ से

ثُمَّ	سُئِلُوا	الْفِتْنَةَ	لَاٰتَوْهَا	وَمَا	تَلَبَّثُوْا	بِهَآ	اِلَّا
फिर	वो सवाल किए जाते	फ़ितना बरपा करने का	अलबत्ता वो आते उसे	और ना	वो इंतिज़ार करते	उसका	मगर

يَسِيْرًا (14)	وَلَقَدْ	كَانُوْا	عَاهَدُوا	اللّٰهَ	مِنْ قَبْلُ	لَا يُوَلُّوْنَ
बहुत थोड़ा	और अलबत्ता तहक़ीक़	थे वो	वो अहद कर चुके	अल्लाह से	इससे पहले	कि नहीं वो फेरेंगे

الْاَدْبَارَ ۭ	وَكَانَ	عَهْدُ	اللّٰهِ	مَسْـُٔوْلًا (15)	قُلْ	لَّنْ	يَّنْفَعَكُمُ
पुश्तें	और है	अहद	अल्लाह का	पूछा जाने वाला	कह दीजिए	हरगिज़ नहीं	फ़ायदा देगा तुम्हें

الْفِرَارُ	اِنْ	فَرَرْتُمْ	مِّنَ الْمَوْتِ	اَوِ	الْقَتْلِ	وَاِذًا	لَّا تُمَتَّعُوْنَ
भागना	अगर	भागे तुम	मौत से	या	क़त्ल से	और तब	ना तुम फ़ायदा दिए जाओगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	قَلِيْلًا ⑯	قُلْ	مَنْ	ذَا الَّذِيْ	يَعْصِمُكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	اِنْ
मगर	बहुत थोड़े	कह दीजिए	कौन है	वो जो	बचाएगा तुम्हें	अल्लाह से	अगर

اَرَادَ	بِكُمْ	سُوْٓءًا	اَوْ	اَرَادَ	بِكُمْ	رَحْمَةً ط	وَلَا
उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	बुराई का	या	उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	रहमत का	और नहीं

يَجِدُوْنَ	لَهُمْ	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا ⑰	قَدْ
वो पाएंगे	अपने लिए	सिवाए	अल्लाह के	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	तहक़ीक़

يَعْلَمُ	اللّٰهُ	الْمُعَوِّقِيْنَ	مِنْكُمْ	وَالْقَآئِلِيْنَ	لِاِخْوَانِهِمْ	هَلُمَّ
जानता है	अल्लाह	रोकने वालों को	तुम में से	और कहने वालों को	अपने भाईयों से	आओ

اِلَيْنَا ج	وَلَا	يَاْتُوْنَ	الْبَاْسَ	اِلَّا	قَلِيْلًا ⑱ لا	اَشِحَّةً	عَلَيْكُمْ صلے ج
तरफ़ हमारे	और नहीं	वो आते	लड़ाई को	मगर	बहुत थोड़े	बख़ील हैं	तुम पर

فَاِذَا	جَآءَ	الْخَوْفُ	رَاَيْتَهُمْ	يَنْظُرُوْنَ	اِلَيْكَ	تَدُوْرُ	اَعْيُنُهُمْ
फिर जब	आता है	ख़ौफ़	देखते हैं आप उन्हें	वो देखते हैं	तरफ़ आपके	घूमती हैं	आंखें उनकी

كَالَّذِيْ	يُغْشٰى	عَلَيْهِ	مِنَ الْمَوْتِ ج	فَاِذَا	ذَهَبَ	الْخَوْفُ
उस शख़्स की तरह	ग़शी तारी की जा रही हो	जिस पर	मौत की	फिर जब	चला जाता है	ख़ौफ़

سَلَقُوْكُمْ	بِاَلْسِنَةٍ	حِدَادٍ	اَشِحَّةً	عَلَى الْخَيْرِ ط	اُولٰٓئِكَ	لَمْ
बदज़बानी करते हैं आपसे	साथ ज़बानों के	तेज़	हिर्स/बुख़्ल करते हुए	माल पर	यही लोग हैं	नहीं

يُؤْمِنُوْا	فَاَحْبَطَ	اللّٰهُ	اَعْمَالَهُمْ ط	وَكَانَ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرًا ⑲
वो ईमान लाए	तो ज़ाया कर दिया	अल्लाह ने	उनके आमाल को	और है	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान

يَحْسَبُوْنَ	الْاَحْزَابَ	لَمْ	يَذْهَبُوْا ج	وَاِنْ	يَّاْتِ	الْاَحْزَابُ
वो समझते है	गिरोहों/लश्करों को	कि नहीं	वो गए	और अगर	आ जाएं	गिरोह/लश्कर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوَدُّوْا	لَوْ	اَنَّهُمْ	بَادُوْنَ	فِي الْاَعْرَابِ	يَسْاَلُوْنَ
वो चाहेंगे	काश	ये कि वो	बाहर रहने वाले होते	बद्दुओं/एराबियों में	वो पूछ लिया करते

ع 2 12 18

عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ	وَلَوْ	كَانُوْا	فِيْكُمْ	مَّا	قٰتَلُوْٓا	اِلَّا	قَلِيْلًا ؑ 20
ख़बरें तुम्हारी	और अगर	वो होते	तुम में	ना	वो जंग करते	मगर	बहुत कम

لَقَدْ	كَانَ	لَكُمْ	فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ	اُسْوَةٌ	حَسَنَةٌ	لِّمَنْ
अलबत्ता तहक़ीक़	है	तुम्हारे लिए	अल्लाह के रसूल में	नमूना	अच्छा	उसके लिए जो

كَانَ	يَرْجُوا	اللّٰهَ	وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ	وَذَكَرَ	اللّٰهَ	كَثِيْرًا ؕ 21
हो	उम्मीद रखता	अल्लाह की	और आख़िरी दिन की	और वो याद करे	अल्लाह को	कसरत से

وَلَمَّا	رَاَ	الْمُؤْمِنُوْنَ	الْاَحْزَابَ ۙ	قَالُوْا	هٰذَا	مَا	وَعَدَنَا
और जब	देखा	मोमिनों ने	गिरोहों को	वो कहने लगे	ये है	वो ही जो	वादा किया हमसे

اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ	وَصَدَقَ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ ز	وَمَا	زَادَهُمْ
अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और सच फ़रमाया	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और नहीं	उसने ज़्यादा किया उन्हें

اِلَّآ	اِيْمَانًا	وَّتَسْلِيْمًا ؕ 22	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	رِجَالٌ	صَدَقُوْا
मगर	ईमान	और सुपुर्दगी में	मोमिनों में से	कुछ मर्द हैं	जिन्होंने सच कर दिया

مَا	عَاهَدُوا	اللّٰهَ	عَلَيْهِ ج	فَمِنْهُمْ	مَّنْ	قَضٰى	نَحْبَهٗ
जो	उन्होंने अहद किया था	अल्लाह से	जिस पर	तो कोई उनमें से वो है	जो	पूरी कर चुका	नज़र अपनी

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّنْتَظِرُ ۖ	وَمَا	بَدَّلُوْا	تَبْدِيْلًا ۙ 23	لِّيَجْزِيَ	اللّٰهُ
और उनमें से कोई है	जो	मुंतज़िर है	और नहीं	उन्होंने तब्दीली की	तब्दीली करना	ताकि बदला दे	अल्लाह

الصّٰدِقِيْنَ	بِصِدْقِهِمْ	وَيُعَذِّبَ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنْ	شَآءَ	اَوْ
सच्चों को	उनकी सच्चाई का	और वो अज़ाब दे	मुनाफ़िक़ों को	अगर	वो चाहे	या

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَتُوْبَ	عَلَيْهِمْ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿24﴾ ج	وَرَدَّ
वो मेहरबान हो जाए	उन पर	बेशक	अल्लाह	है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और फेर दिया

اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِغَيْظِهِمْ	لَمْ	يَنَالُوْا	خَيْرًا ط	وَكَفَى
अल्लाह ने	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ उनके ग़ुस्से के	नहीं	उन्होंने पाई	कोई भलाई	और काफ़ी हो गया

اللّٰهُ	الْمُؤْمِنِيْنَ	الْقِتَالَ ط	وَكَانَ	اللّٰهُ	قَوِيًّا	عَزِيْزًا ﴿25﴾ ج
अल्लाह	मोमिनों को	जंग में	और है	अल्लाह	बहुत क़ुव्वत वाला	बहुत ज़बरदस्त

وَاَنْزَلَ	الَّذِيْنَ	ظَاهَرُوْهُمْ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	مِنْ صَيَاصِيْهِمْ
और उसने उतारा	उनको जिन्होंने	मदद की उनकी	अहले किताब में से	उनके क़िलों से

وَقَذَفَ	فِيْ قُلُوْبِهِمُ	الرُّعْبَ	فَرِيْقًا	تَقْتُلُوْنَ	وَتَاْسِرُوْنَ
और उसने डाल दिया	उनके दिलों में	रौब	एक गिरोह को	तुम क़त्ल कर रहे थे	और तुम क़ैद कर रहे थे

فَرِيْقًا ﴿26﴾ ج	وَاَوْرَثَكُمْ	اَرْضَهُمْ	وَدِيَارَهُمْ	وَاَمْوَالَهُمْ	وَاَرْضًا
एक गिरोह को	और उसने वारिस बना दिया तुम्हें	उनकी ज़मीन का	और उनके घरों का	और उनके मालों का	और उस ज़मीन का

لَّمْ	تَطَئُوْهَا ط	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرًا ﴿27﴾ ع	ع 3 7 19
नहीं	तुमने पामाल किया जिसे	और है	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला	

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ	قُلْ	لِّاَزْوَاجِكَ	اِنْ	كُنْتُنَّ	تُرِدْنَ	الْحَيٰوةَ
ऐ नबी	कह दीजिए	अपनी बीवियों से	अगर	हो तुम	तुम चाहती	ज़िंदगी

الدُّنْيَا	وَزِيْنَتَهَا	فَتَعَالَيْنَ	اُمَتِّعْكُنَّ	وَاُسَرِّحْكُنَّ	سَرَاحًا
दुनिया की	और ज़ीनत उसकी	तो आओ	मैं कुछ सामान दे दूं तुम्हें	और मैं रुख़्सत कर दूं तुम्हें	रुख़्सत करना

جَمِيْلًا ﴿28﴾	وَاِنْ	كُنْتُنَّ	تُرِدْنَ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	وَالدَّارَ
अच्छे तरीक़े से	और अगर	हो तुम	तुम चाहती	अल्लाह को	और उसके रसूल को	और घर को

©AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

الْاٰخِرَةَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	اَعَدَّ	لِلْمُحْسِنٰتِ	مِنْكُنَّ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿29﴾
आख़िरत के	तो बेशक	अल्लाह ने	तैयार कर रखा है	नेकी करने वालियों के लिए	तुम में से	अजर	बहुत बड़ा

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ	مَنْ	يَّاْتِ	مِنْكُنَّ	بِفَاحِشَةٍ	مُّبَيِّنَةٍ	يُّضٰعَفْ
ऐ नबी की बीवियो	जो कोई	आएगी	तुम में से	बेहयाई को	खुली	बढ़ा दिया जाएगा

لَهَا	الْعَذَابُ	ضِعْفَيْنِ ؕ	وَكَانَ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرًا ﴿30﴾
उसके लिए	अज़ाब	दोगुना	और है	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION